

पिक:- वांगे

वाण :- कामधेनू, मंजुषा, केतन, हर्षल, ग्रीन ग्लोरी, जयंत, गायत्री, ग्रीन गरिमा, चैतन्य, सुरूची, सिलेक्शन-09, अमिताभ, किस्मत, जामवंत, सुमित, स्वेतांबर, अभय, अक्षय, आम्रपाली, मोहित, एम आर बी -17, निशा, विजेता, तुषार, सिलेक्शन-786, सौरभ, कन्हेया, ग्रीन पारस, क्रॉस क्वीन, ग्रीन क्लस्टर, ग्रीन फिशरी, बहार.

हवामान :- कोरड्या आणि उष्ण हवामानात वांग्याची वाढ चांगली होते. ढगाळ हवामानात एकसारखा पाऊस मानवत नाही. सरासरी 13° ते 21° सें. ग्रे तापमानात वांग्याचे पीक चांगले येते.

जमीन :- चांगला पाण्याचा निचरा होणारी, मध्यम काळी कसदार जमीन या पिकासाठी उत्तम समजली जाते. भरपूर सेंद्रिय खत घातलेली चांगली मशागत केलेल्या जमिनीत पीक चांगले येते.

बिज प्रक्रिया वेळ/ रासायनिक औषध:- कार्बेन्डाझिम (बाविस्टीन) 01 ग्रॅम प्रति किलो बियाणास लावावे.

पेरणीची वेळ:- खरीप हंगाम : बियांची पेरणी जूनच्या दुसऱ्या आठवड्यात गादी वाफ्यावर करावी आणि रोपांची लागवड जुलै-ऑगस्ट मध्ये करावी.

रबी हंगाम : बियांची पेरणी सप्टेंबर अखेर करावी व रोपांची लागवड ऑक्टोबर-नोव्हेंबर.

उन्हाळी हंगाम: बियांची पेरणी जानेवारीच्या दुसऱ्या आठवड्यात वाफ्यावर करावी व रोपांची लागवड फेब्रुवारी महिन्यात करावी.

पेरणीसाठी लागणारे बियाणे-पेरणीची पद्धत-दोन ओळीतील अंतर

बियाणे :- एक हेक्टर लागवडीसाठी 150-200 ग्रॅम बियाणे पुरेसे आहे.

पेरणीची पद्धत :- (दोन ओळीतील व दोन रोपांमध्ये अंतर ठेवून पेरणी करावी.)

खरीप : 90 x 75 सें.मी. रबी:- 75 x 60 सें.मी. उन्हाळी:- 60 x 50 सें.मी.

वांग्याची रोपे गादीवाफ्यावर तयार करावीत व नंतर 4-5 आठवड्यांनंतर शेतात स्थालातांतरीत करावी.

रासायनिक खत मात्रा व खत देण्याचा कालावधी व वेळ

अ. क्र.	रासायनिक खत प्रति हेक्टर	नत्र (कि. ग्रॅ.)	स्फुरद (कि. ग्रॅ.)	पालाश (कि. ग्रॅ.)
1	लागवडीपूर्वी	50	100	100
2	25 दिवसांनी रोपे लागवडी नंतर	50	00	00
3	फुल धारणा पूर्वी	50	00	00
4	पहिल्या तोडणी नंतर	50	00	00

रोग व कीड नियंत्रण : खतासोबत फरटेरा (ड्रुपौड) 4 किलो प्रति एकरी किंवा व्हर्टिको (सिजेटा) 2.5 किलो प्रति एकरी या दराने वापरल्यास सुमारे 21 दिवस मावा व तुडतुडे पासून चांगले संरक्षण मिळते.

अ. क्र.	रोग/ कीड	औषधाचे नाव	मात्रा प्रति लि पाण्यात
1	मर रोग	एॅलिपेट	02 ग्रॅ प्रति लि.
2	पानांवरील ठिपके	नाटीओ	08 ग्रॅ प्रति 15 लि.
		एन्टरकॉल	02 ग्रॅ प्रति लि.
3	फळसड	नाटीओ	08 ग्रॅ प्रति 15 लि.
4	भुरी	बेलेटॉन	125 ग्रॅ प्रति एकर.
5	शेंडा व फळे पोखरणारी अळी	प्रोफेनोफॉस	01 मि. ली प्रति लि
		फेम	04 मि. ली प्रति 15 लि
6	मिलीबग	एडमायर	40 ग्रॅ प्रति एकर..
7	मावा, तुडतुडे	कॉन्फिडोर	04 मि. ली प्रति 15 लि
		एक्टरा	06 ग्रॅ प्रति 15 लि.
8	फुलकिडे	रिजेन्ट	02 मि. ली प्रति लि.
9	पांढरी माशी	लॅनो	02 मि. ली प्रति लि.
		पेगासस	01 ग्रॅ प्रति लि.
10	कोळी (माईट)	सल्फर	02 ग्रॅ प्रति लि.
		मॅजिस्टर	02 मि. ली प्रति लि.
		ओबेरॉन	01 मि. ली प्रति लि.
11	फळ व फुलगळ साठी संजीवके	प्लॅनोफिक्स	30-40 मि. ली प्रति एकर.

बोकड्या किंवा पर्णगुच्छ : या रोगामुळे वांग्याच्या झाडांची आणि पानांची वाढ खुंटते. झाडाची पाने लहान बोकड्यासारखी किंवा पर्णगुच्छसारखी दिसतात. हा रोग अतिसूक्ष्म अशा मायकोप्लाझ्मा या विषाणूमुळे होतो. या रोगाचा प्रसार तुडतुडे या किडीमुळे होतो. या रोगाच्या प्रथमावस्थेत रोगट झाडे उपटून नष्ट करावीत. तुडतुडे या किडीचा बंदोबस्त करावा.

सूत्रकृमी (रूट नॉट निर्मेटोड) : जमिनीतील सूत्रकृमीमुळे झाडाची वाढ खुंटते, पाने पिवळी पडतात आणि झाडाच्या मुळांवर गाठी येतात. या रोगाच्या नियंत्रणासाठी निंबोळी पेंडीचा जमिनीत वापर करावा आणि पिकाची फेरपालट करावी. बांधाने तसेच दांडाने झेंडूची लागवड करावी

आंतरमशागत व पाणी व्यवस्थापन:- खुरपणी करून पिकातील तण काढून टाकावे. लागवडीनंतर 30 ते 40 दिवसांनी रोपांना मातीची भर द्यावी. वेळोवेळी खुरपणी करून पीक स्वच्छ ठेवावे. पावसाळ्यात 15 दिवसांचा अंतराने, हिवाळ्यात 8-10 दिवसांचा अंतराने व उन्हाळ्यात 4-5 दिवसांचा अंतराने पाणी द्यावे. फुले येण्याच्या काळ व फळे पोसण्याच्या काळात पाण्याचा ताण देवू नये. तसेच वेळोवेळी पिकास गरजेनुसार पाणी द्यावे म्हणजे चांगले उत्पादन मिळेल.

पिक काढणीचा तपशील :- रोप लावणी नंतर 10-12 आठवड्यांनी फळे तयार होतात. फळे पूर्ण वाढून टक्कटवीत आणि चकचकीत असतांना काढणी करावी. कोवळी फळे काढल्यास उत्पादनात घट येते.

टीप: वरील दिलेली माहिती हि आमच्या संशोधन केंद्रात घेतलेल्या चाचण्या वरून दिलेली आहे. यात जमीन, भौगोलिक हवामान, पिकाची नियोजन पद्धती इत्यादी कारणांमुळे या मध्ये बदल होऊ शकतो.

किस्में:- कामधेनू, मंजुषा, केतन, हर्षल, ग्रीन ग्लोरी, जयंत, गायत्री, ग्रीन गरिमा, चैतन्य, सुरूची, सिलेक्शन-09, अमिताभ, किस्मत, जामवंत, सुमित, स्वेतांबर, अभय, अक्षय, आम्रपाली, मोहित, एम आर बी -17, निशा, विजेता, तुषार, सिलेक्शन-786, सौरभ, कन्हैया, ग्रीन पारस, क्रॉस क्वीन, ग्रीन क्लस्टर, ग्रीन फिशरी, बहार.

उपयुक्त जलवायु:- बैंगन कि खेती से अधिकतम उत्पादन लेने के लिए लम्बे तथा गर्म मौसम कि आवश्यकता होती है। इसके बीजों के अच्छे अंकुरण के 25 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त माना गया है और पौधों कि अच्छी बढ़वार के लिए 13 से 21 डिग्री सेल्सियस औसत तापमान सर्वोत्तम रहता है।

भूमि चयन:- बैंगन की फसल सख्त होने के कारण इसे अलग अलग तरह की मिट्टी में उगाया जा सकता है। यह एक लंबे समय की फसल है, इसलिए अच्छे जल निकास वाली उपजाऊ रेतली दोमट मिट्टी उचित होती है और अच्छी पैदावार देती है। अग्रेती फसल के लिए हल्की मिट्टी और अधिक पैदावार के लिए चिकनी और नमी या गारे वाली मिट्टी उचित होती है। फसल की वृद्धि के लिए 5.5-6.6 पी एच होनी चाहिए।

बीज उपचार:- कार्बेन्डाजिम (बाविस्टीन) 01 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से लगायें।

बुवाई का समय :- बैंगन की फसल को वर्ष में तीन बार लिया जा सकता है, ताकि वर्ष भर बैंगन मिलते रहें। वर्षाकालीन फसल- नर्सरी तैयार करने का समय फरवरी से मार्च और मुख्य खेत में रोपाई का समय मार्च से अप्रैल उचित है। शरदकालीन फसल- नर्सरी तैयार करने का समय जून से जुलाई और मुख्य खेत में रोपाई का समय जुलाई से अगस्त उचित है। बसंतकालीन समय- नर्सरी तैयार करने का समय दिसम्बर और मुख्य खेत में रोपाई का समय दिसम्बर से जनवरी उचित है।

बीज की मात्रा:- एक हेक्टेयर में पौध रोपाई के लिये 150 से 200 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

अंतर :- दो कतारों में 90 से.मी ; दो पौधों में 60-65 से.मी.

खाद एवं उर्वरक:- खेत तैयार करते समय 25 से 30 टन प्रति हेक्टेयर गली सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट अवश्य मिट्टी में मिलाएं

क्र.	रासायनिक खाद प्रति हेक्टेयर	नत्रजन (कि.ग्रा.)	फास्फोरस (कि.ग्रा.)	पोटाश (कि.ग्रा.)
1	बुवाई पूर्व	50	100	100
2	रोपाई के 25 दिन बाद	50	00	00
3	फुल खिलने के पहिले	50	00	00
4	पहिले तुड़ाई के बाद	50	00	00
	कुल	200	100	100

रोग व कीट नियंत्रण : खाद के साथ फरटेरा (ड्रूपांड) 4 किलो प्रति एकड़ अथवा व्हर्टिको (सिंजेंट) 2.5 किलो प्रति एकड़ इस प्रमाण से एस्तेमाल करणे से 21 दिन तक रस चुसानेवाले किट से संरक्षण मिलता है.

क्र.	रोग/ कीट	नियंत्रण	मात्रा प्रति ली पाणी में
1	सूखा रोग	एलिएट	2 ग्राम प्रति ली
2	पत्तों पर धब्बे	नाटीओ	8 ग्राम प्रति 15 ली.
		एन्टरकॉल	2 ग्राम प्रति ली
3	फल गलन	नाटीओ	8 ग्राम प्रति 15 ली
4	पत्तों पर सफेद धब्बे	बेलेटॉन	125 ग्राम प्रति एकड़.
5	फल और शाख का कीट	प्रोफेनोफॉस	01 मि. ली प्रति ली
		फेम	04 मि. ली प्रति 15 ली
6	मिलीबग	एडमायर	40 ग्राम प्रति एकड़.
7	चेपा, हरे तेले (जेसिड)	कॉन्फिडोर	04 मि. ली प्रति 15 ली
		एक्तरा	06 ग्राम प्रति 15 ली
8	थ्रिप	रिजेन्ट	02 मि. ली प्रति ली
9	सफेद मक्खी	लॅनो	02 मि. ली प्रति ली.
		पेगासस	01 ग्राम प्रति ली
10	माईट	सल्फर	02 ग्राम प्रति ली
		मैजिस्टर	02 मि. ली प्रति ली.
		ओबेरॉन	01 मि. ली प्रति ली
11	फल फूल पौधे विकास नियामक	प्लॅनोफिक्स	30-40 मि. ली प्रति एकड़

मूल ग्रन्थी सूत्र कृमि (निमेटोड)- इसकी वजह से बैंगन की जड़ों पर गांठे बन जाती हैं और पौधों की बढ़वार रूक जाती है तथा पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसकी रोकथाम के लिए फसल चक्र अपनाएं और मिट्टी में फरटेरा (ड्रूपांड) 4 किलो प्रति एकड़ मिलाएं।

छोटी पत्ती रोग- यह बैंगन का एक माइकोप्लाज्मा जनित विनाशकारी रोग है। इस रोग के प्रकोप से पत्तियां छोटी रह जाती हैं और गुच्छे के रूप में तने के ऊपर उगी हुई दिखाई देती हैं। पूरा रोगग्रस्त पौधा झाड़ीनुमा लगता है। ऐसे पौधों पर फल नहीं बनते है। रोग ग्रस्त पौधे को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिये। यह रोग हरे तेले (जेसिड) द्वारा फैलता है, इसलिए इसकी रोकथाम करें.

सिंचाई :- गर्मियों में हर 3-4 दिन बाद पानी लगाएं और सर्दियों में 12-15 दिन बाद पानी लगाएं। अधिक पैदावार लेने के लिए सही समय पर पानी लगाना बहुत जरूरी है। फसल को कोहरे वाले दिनों में बचाने के लिए मिट्टी में नमी बनाये रखें और लगातार पानी लगाएं। फसल में पानी खड़ा होने से रोंके, क्योंकि बैंगन की फसल खड़े पानी को सहने योग्य नहीं है।

खरपतवार नियंत्रण :- नदीनों को रोकने, अच्छे विकास और उचित हवा के लिए दो - चार गोडाई करें। काले रंग की पॉलिथीन शीट से पौधों को ढक दें जिससे नदीनों का विकास कम हो जाता है और ज़मीन का तापमान भी बना रहता है।

फसल की कटाई:- बैंगन की तुड़ाई फल पकने से थोड़ा समय पहले की जाती है, जब फल उचित आकार और रंग का हो जाता है। मंडी में अच्छा रेट लेने के लिए फल चिकना और आकर्षक रंग का होना चाहिए।

टिपणी :- उपरोक्त सभी जाणकारीया हमारे अनुसंधान केंद्र पर किये गये प्रयोग पर आधारित है. भिन्न स्थानो पर भिन्न मौसम, भूमी प्रकार एवं ऋतू के कारण उपरोक्त जाणकारी मे बदलाव आ सकता है.

Brinjal

Hybrids/Varieties: - Kamdhenu, Manjusha, Ketan, Harshal, Green Glory, Jayant, Gayatri, Green Garima, Chaitanya, Suruchi, Selection-09, Amitabh, Kismat, Jamwant, Sumit, Swetambar, Abhay, Akshay, Amrapali, Mohit, MRB-17, Nisha, Vijeta, Tushar, Selection-786, Saurabh, Kanhaiya, Green Paras, Cross Queen, Green Cluster, Green Fishery, Bahar.

Suitable climate:- Long and warm season is required to get maximum production from brinjal cultivation. 25 degree Celsius temperature is considered suitable for good germination of its seeds and 13 to 21 degree Celsius average temperature is best for good growth of plants.

Soil selection:- Since brinjal crop is hardy, it can be grown in different types of soil. It is a long duration crop, hence fertile sandy loam soil with good drainage is suitable and gives good yield. Light soil is suitable for early crop and clayey and moist or clayey soil is suitable for high yield. For crop growth, the pH should be 5.5-6.6.

Seed treatment:- Apply carbendazim (Bavistin) at the rate of 01 gram per kilogram of seed.

Sowing time:- Brinjal crop can be taken three times in a year, so that brinjals are available throughout the year. Rainy season crop- The time for preparing nursery is February to March and the time for transplanting in the main field is March to April. Autumn season crop- The time for preparing nursery is June to July and the time for transplanting in the main field is July to August. Spring season- The time for preparing nursery is December and the time for transplanting in the main field is December to January.

Seed quantity:- 150 to 200 grams of seed is required for transplanting saplings in one hectare.

Distance:- 90 cm between two rows; 60-65 cm between two plants.

Manure and Fertilizer:- While preparing the field, mix 25 to 30 tons of rotten cow dung manure or compost per hectare in the soil.

No.	Chemical fertilizer per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	Pre sowing	50	100	100
2	25 days after transplanting	50	00	00
3	Before flowering	50	00	00
4	After first harvest	50	00	00
	Total	200	100	100

Disease and Pest Control

Using Fertilizer at the rate of Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre gives protection from sucking pests for 21 days.

No.	Diseases/ Pests	Control	Quantity per liter of water
1	Wilt	Aliett	2 gram per liter
2	Spots on the leaves	Natio	8 gram per 15 liter
		Entercol	2 gram per liter
3	Fruit rot	Natio	8 gram per 15 liter
4	White spots on the leaves	Baleton	125 gram per acre
5	Fruit and shoot Borer	Profenofos	01 ml per liter
		Fem	04 ml per 15 liter
6	Mealy bug	Admire	40 gram per acre
7	Jassids	Confidor	04 ml per 15 liter
		Actra	06 gram per 15 liter
8	Thrips	Regent	02 ml per liter
9	White Fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
10	Mite	Sulfur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
		Oberon	01 ml per liter
11	Fruit and Plant Growth Regulator	Planofix	30-40 ml per acre

Root knot nematode- Due to this, knots are formed on the roots of brinjal and the growth of the plants stops and the yield is adversely affected. To prevent this, follow crop rotation and mix 4 kg of Fartera (Dupond) per acre in the soil.

Small leaf disease- This is a destructive disease of brinjal caused by mycoplasma. Due to the outbreak of this disease, the leaves remain small and appear to grow on the stem in the form of bunches. The entire diseased plant looks like a bush. Fruits do not form on such plants. The diseased plant should be uprooted and destroyed. This disease spreads through green mite (jassid), so prevent it.

Irrigation:- In summers, water after every 3-4 days and in winters, water after every 12-15 days. To get more yield, it is very important to water at the right time. To protect the crop during foggy days, maintain moisture in the soil and water continuously. Prevent water stagnation in the crop, as brinjal crop is not tolerant of stagnant water.

Weed Control:- Do two-four weedings to prevent weeds, for good growth and proper aeration. Cover the plants with black polythene sheet which reduces the growth of weeds and also maintains the soil temperature.

Harvesting:- Brinjal is harvested a little before the fruit ripens, when the fruit attains proper size and color. To get good rate in the market, the fruit should be smooth and attractive in color.

Note:- All the above information is based on the experiment done at our research center. The above information may change due to different weather, soil type and season at different places.

રીંગણ

જાતો:- કામધેનુ, મંજુષા, કેતન, હર્ષલ, ગ્રીન ગ્લોરી, જયંત, ગાયત્રી, લીલી ગરિમા, ચૈતન્ય, સુરુચી, પસંદગી-09, અમિતાભ, કિસ્મત, જામવંત, સુમિત, સ્વેતાંબર, અભય, અક્ષય, આપ્તપાલી, મોહિત, એમઆરબી-17, નિષાભ-6, તુષાર-6, નિષાભ, પસંદગી-09 કન્હેયા, ગ્રીન પારસ, કોસ કવીન, ગ્રીન કલસ્ટર, ગ્રીન ફિશરી, બહાર.

યોગ્ય વાતાવરણ:- રીંગણની ખેતીમાંથી મહત્તમ ઉત્પાદન મેળવવા માટે, લાંબી અને ગરમ ઋતુ જરૂરી છે. બીજના સારા અંકુરણ માટે, 25 ડિગ્રી સેલ્સિયસ તાપમાન યોગ્ય માનવામાં આવે છે અને છોડના સારા વિકાસ માટે, સરેરાશ 13 થી 21 ડિગ્રી સેલ્સિયસ તાપમાન શ્રેષ્ઠ માનવામાં આવે છે.

માટીની પસંદગી:- રીંગણનો પાક કઠણ હોવાથી, તેને વિવિધ પ્રકારની જમીનમાં ઉગાડી શકાય છે. આ પાક લાંબા ગાળાનો છે, તેથી સારા પાણીના નિકાલવાળી ફળદ્રુપ રેતાળ લોમ જમીન યોગ્ય છે અને સારી ઉપજ આપે છે. વહેલી પાક માટે હળવી જમીન યોગ્ય છે અને વધુ ઉપજ માટે માટી અને ભેજવાળી અથવા માટીવાળી જમીન યોગ્ય છે. પાકના વિકાસ માટે pH 5.5-6.6 હોવો જોઈએ.

બીજ માવજત:- કાર્બેન્ડાઝીમ (બાવિસ્ટિન) પ્રતિ કિલોગ્રામ બીજમાં 01 ગ્રામના દરે નાખો.

વાવણીનો સમય:- રીંગણનો પાક વર્ષમાં ત્રણ વાર લઈ શકાય છે, જેથી આખા વર્ષ દરમિયાન રીંગણ ઉપલબ્ધ રહે. વરસાદી ઋતુનો પાક - નર્સરી તૈયાર કરવાનો યોગ્ય સમય ફેબ્રુઆરીથી માર્ચ છે અને મુખ્ય ખેતરમાં રોપણી માટે યોગ્ય સમય માર્ચથી એપ્રિલ છે. પાનખર પાક - નર્સરી તૈયાર કરવાનો યોગ્ય સમય જૂન થી જુલાઈ છે અને મુખ્ય ખેતરમાં રોપણી માટે યોગ્ય સમય જુલાઈ થી ઓગસ્ટ છે. વસંત ઋતુ - નર્સરી તૈયાર કરવાનો યોગ્ય સમય ડિસેમ્બર છે અને મુખ્ય ખેતરમાં રોપણી માટે યોગ્ય સમય ડિસેમ્બરથી જાન્યુઆરી છે.

બીજની માત્રા:- એક હેક્ટરમાં વાવેતર માટે 1૫૦ થી ૨૦૦ ગ્રામ બીજની જરૂર પડે છે.

અંતર :- બે હરોળમાં 90 સે.મી.; બે છોડમાં 60-65 સે.મી.

ખાતર અને ખાતર:- ખેતર તૈયાર કરતી વખતે, પ્રતિ હેક્ટર 25 થી 30 ટન સડેલું ગાયનું છાણ ખાતર અથવા ખાતર જમીનમાં ભેળવો.

ના.	પ્રતિ હેક્ટર રાસાયણિક ખાતરો	નાઇટ્રોજન (કિલો)	ફોસ્ફરસ (કિલો)	પોટાશ (કિલો)
૧	વાવણી પહેલા	૫૦	૧૦૦	૧૦૦
૨	રોપણી પછી 25 દિવસ	૫૦	૦૦	૦૦
૩	ફલ આવતા પહેલા	૫૦	૦૦	૦૦
૪	પહેલી લણણી પછી	૫૦	૦૦	૦૦
ના.	કુલ	૨૦૦	૧૦૦	૧૦૦

રોગ અને જીવાત નિયંત્રણ રાસાયણિક દવાઓ, જથ્થો અને સમય

ખાતર સાથે ફર્ટિલાઇઝર (ડુપોન્ડ) 4 કિલો પ્રતિ એકર અથવા વર્ટીકો (સિજેન્ટા) 2.5 કિલો પ્રતિ એકર વાવરવાથી 21 દિવસ સુધી રસ યુસનારા જંતુઓથી રક્ષણ મળે છે.

ના.	રોગો/જીવાતો	નિયંત્રણ	પ્રતિ લિટર પાણીનો જથ્થો
૧	રિક્ટસ	એલિથેટ	2 ગ્રામ પ્રતિ લિટર
૨	પાંદડા પર ફોલ્લીઓ	નાટિયો	૧૫ લિટર દીઠ ૮ ગ્રામ.
		એન્ટરકોલ	2 ગ્રામ પ્રતિ લિટર
૩	ફળનો સડો	નાટિયો	૧૫ લિટર દીઠ ૮ ગ્રામ
૪	પાંદડા પર સફેદ ફોલ્લીઓ	બેલેટન	પ્રતિ એકર ૧૨૫ ગ્રામ.
૫	ફળ અને ડાળીઓ પર લાગતી જીવાત	પ્રોફેનોફોસ	૦૧ મિનિટ. લી પર લી
		ખ્યાતિ	૦૪ મિનિટ ૧૫ લિટર પ્રતિ લિટર
૬	મીલીબગ્સ	એડમાયર	40 ગ્રામ પ્રતિ એકર.
૭	એફિડ, લીલું તેલ (જેસિડ)	કોન્ફીડોર	૦૪ મિનિટ ૧૫ લિટર પ્રતિ લિટર
		એક્ટ્રા	૧૫ લિટર દીઠ ૦૬ ગ્રામ
૮	શ્વિપ	રીજન્ટ	૦૨ મિનિટ લી પર લી
૯	સફેદ માખી	લાનો	૦૨ મિનિટ લી પ્રતિ લી.
		પેગાસસ	01 ગ્રામ પ્રતિ લિટર
૧૦	શકે છે	સલ્ફર	02 ગ્રામ પ્રતિ લિટર
		મેજિસ્ટર	૦૨ મિનિટ લી પ્રતિ લી.
		ઓબેરોન	૦૧ મિનિટ. લી પર લી
	ફળ અને છોડ વૃદ્ધિ નિયમનકાર	પ્લાનોફિક્સ	૩૦-૪૦ મિનિટ. લી પ્રતિ એકર

રુટ ગ્રાંઠ નેમાટોડ - આના કારણે, રીંગણના મૂળ પર ગ્રાંઠો બને છે અને છોડનો વિકાસ અટકી જાય છે અને ઉપજ પર પ્રતિકૂળ અસર થાય છે. આને રોકવા માટે, પાકની ફેરબદલી અપનાવો અને જમીનમાં પ્રતિ એકર 4 કિલો ફર્ટિલાઇઝર (ડુપોન્ડ) ભેળવો.

નાના પાંદડાનો રોગ - આ રીંગણનો એક વિનાશક રોગ છે જે માયકોપ્લાઝ્માને કારણે થાય છે. આ રોગના પ્રકોપને કારણે, પાંદડા નાના રહે છે અને દાંડી પર ગુચ્છીમાં ઉગતા જોવા મળે છે. આખો રોગગ્રસ્ત છોડ ઝાડી જેવો દેખાય છે. આવા છોડ પર ફળો બનતા નથી. રોગગ્રસ્ત છોડને ઉખેડીને નાશ કરવો જોઈએ. આ રોગ લીલા જીવાત (જેસીડ) દ્વારા ફેલાય છે, તેથી તેને અટકાવો.

સિંચાઈ :- ઉનાળામાં દર ૩-૪ દિવસે અને શિયાળામાં ૧૨-૧૫ દિવસે પાણી આપવું. વધુ ઉપજ મેળવવા માટે યોગ્ય સમયે પાણી આપવું ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે. ધુમ્મસવાળા દિવસોમાં પાકને બચાવવા માટે, જમીનમાં ભેજ જાળવી રાખો અને તેને નિયમિતપણે પાણી આપો. રીંગણનો પાક પાણીના સ્થિરતાને સહન કરતો નથી, તેથી પાકમાં પાણી સ્થિર થવાનું ટાળો.

નીંદણ નિયંત્રણ :- નીંદણ નિયંત્રણ, સારી વૃદ્ધિ અને યોગ્ય વાયુમિશ્રણ માટે બે થી ચાર નીંદણ કરો. છોડને કાળા પોલીથીન શીટથી ઢાંકો જે નીંદણનો વિકાસ ઘટાડે છે અને જમીનનું તાપમાન પણ જાળવી રાખે છે.

કાપણી:- ફળ પાકે તે પહેલાં, જ્યારે ફળ યોગ્ય કદ અને રંગ પ્રાપ્ત કરે છે, રીંગણની કાપણી કરવામાં આવે છે. બજારમાં સારો ભાવ મેળવવા માટે, ફળ સુંવાળું અને આકર્ષક રંગનું હોવું જોઈએ.

નોંધ :- ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગો પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી અલગ અલગ સ્થળોએ અલગ અલગ આબોહવા, જમીનના પ્રકાર અને ઋતુઓને કારણે બદલાઈ શકે છે.

వంకాయ

రకాలు:- కామధేను, మంజూష, కేతన్, హర్లే, గ్రీన్ గ్రో, జయంత, గాయత్రి, లీల్ గరిమ, చైతన్య, సురుచి, ఎంపిక-09, అమితాబ్, కిస్కత్, జామ్యంత్, సుమిత్, శ్వేతాంబర్, అభయ, అక్షయ, ఆప్రపాలి, మోహిత, NRBh-17, NRBh-17 ఎంపిక-09 కస్తూర్బి, గ్రీన్ పరాస్, క్రాస్ క్విన్, గ్రీన్ క్లస్టర్, గ్రీన్ ఫిఫర్, బహర్.

అనుకూలమైన వాతావరణం: - వంకాయ సాగు నుండి గరిష్ట దిగుబడిని పొందడానికి, దీర్ఘ మరియు వెచ్చని కాలం అవసరం. మంచి విత్తన అంకురత్పత్తికి, 25 డిగ్రీల సెల్సియస్ ఉష్ణోగ్రత అనుకూలంగా పరిగణించబడుతుంది మరియు మంచి మొక్కల పెరుగుదలకు, సగటు ఉష్ణోగ్రత 13 నుండి 21 డిగ్రీల సెల్సియస్ అనుకూలమైనదిగా పరిగణించబడుతుంది.

నేల ఎంపిక:- వంకాయ పూర్తి పంట కాబట్టి, దీనిని వివిధ రకాల నేలల్లో పండించవచ్చు. ఈ పంట దీర్ఘకాలికమైనది, కాబట్టి మంచి నీటి పారుదల సౌకర్యం కలిగిన సారవంతమైన ఇసుక లోమీ నేల అనుకూలంగా ఉంటుంది మరియు మంచి దిగుబడిని ఇస్తుంది. తేలికపాటి నేల ముందస్తు పంటకు అనుకూలంగా ఉంటుంది మరియు బంకమట్టి మరియు తేమ లేదా లోమీ నేల అధిక దిగుబడికి అనుకూలంగా ఉంటుంది. పంట పెరుగుదలకు pH 5.5-6.6 ఉండాలి.

విత్తన శుద్ధి:- కిలో విత్తనానికి 01 గ్రాముల కార్బండిజిమ్ (బావిస్టిన్) వేయండి.

విత్తన సమయం: వంకాయలను సంవత్సరానికి మూడు సార్లు పండించవచ్చు, తద్వారా వంకాయలు ఏడాది పొడవునా లభిస్తాయి. వర్షాకాల పంటలు - నర్సరీని సిద్ధం చేయడానికి సరైన సమయం ఫిబ్రవరి నుండి మార్చి వరకు మరియు ప్రధాన పొలంలో నాటడానికి సరైన సమయం మార్చి నుండి ఏప్రిల్ వరకు. శరదృతువు పంట - నర్సరీని సిద్ధం చేయడానికి సరైన సమయం జూన్ నుండి జూలై వరకు మరియు ప్రధాన పొలంలో నాటడానికి సరైన సమయం జూలై నుండి ఆగస్టు వరకు. వసంతకాలం - నర్సరీని సిద్ధం చేయడానికి సరైన సమయం డిసెంబర్ మరియు ప్రధాన పొలంలో నాటడానికి సరైన సమయం డిసెంబర్ నుండి జనవరి వరకు.

విత్తన పరిమాణం: - ఒక హెక్టారులో నాటడానికి 150 నుండి 200 గ్రాముల విత్తనాలు అవసరం.
అంతరం: - రెండు వరుసలలో 90 సెం.మీ; రెండు మొక్కలు 60-65 సెం.మీ. దూరంలో ఉన్నాయి.

ఎరువు మరియు కంపోస్ట్:- పొలాన్ని సిద్ధం చేసేటప్పుడు, హెక్టారుకు 25 నుండి 30 టన్నుల కుళ్ళిన ఆవు పేడ కంపోస్ట్ లేదా ఎరువును మట్టిలో కలపండి.

లేడు.	హెక్టారుకు రసాయన ఎరువులు	నత్రజని (కి.గ్రా)	భాస్వరం (కి.గ్రా)	భాస్వరం (కి.గ్రా)
1. 1.	విత్తనానికి ముందు	50	100	100
2	నాటిన 25 రోజుల తర్వాత	50	0	0
3	పువ్వులు వికసించే ముందు	50	0	0
4	మొదటి పంట తర్వాత	50	0	0
	మొత్తం	200	100	100

వ్యాధి మరియు తెగులు నియంత్రణ రసాయనాలు, పరిమాణం మరియు సమయం
ఎకరానికి ఫెర్టెరా (డ్యూపాంట్) 4 కిలోలు లేదా ఎకరానికి వెర్మిక్ (సింజెంటా) 2.5 కిలోలు ఎరువులతో కలిపి 21 రోజుల పాటు రసం పీల్చే కీటకాల నుండి రక్షణ కల్పిస్తుంది.

లేడు.	వ్యాధులు/తెగులు	నియంత్రణ	లీటరుకు నీటి పరిమాణం
1.	రికెట్స్	ఎలీయట్	లీటరుకు 2 గ్రాములు
2	ఆకు మచ్చలు	నాటక రచయిత	15 లీటర్లకు 8 గ్రాములు.
		ఎంటర్కోల్	లీటరుకు 2 గ్రాములు
3	పండ్ల తెగులు	నాటక రచయిత	15 లీటర్లకు 8 గ్రాములు
4	ఆకులపై తెల్లని మచ్చలు	బ్యాలేట్	ఎకరానికి 125 గ్రాములు.
5	పండ్లు మరియు కొమ్మలపై తెగులు	ప్రాఫెనోఫోస్	01 నిమిషం. లీ ఆన్ లీ
		కిర్టి	04 నిమిషాలు లీటరుకు 15 లీటర్లు
6	మీలీబగ్స్	ఆరాధించు	ఎకరానికి 40 గ్రాములు.
7	అఫిడ్, గ్రీన్ ఆయిల్ (జాసిడ్)	కాన్సిడర్	04 నిమిషాలు లీటరుకు 15 లీటర్లు
		ఆక్టా	15 లీటర్లకు 06 గ్రాములు
8	త్రిప్స్	రీజెంట్	లీటరుకు 02 నిమిషాలు
9	తెల్లదోమ	లాన్	లీటరుకు 02 నిమిషాలు.
		పెగాసస్	లీటరుకు 01 గ్రాములు
10	చెయ్యవచ్చు	సల్ఫర్	లీటరుకు 02 గ్రాములు
		మాజిస్టర్	లీటరుకు 02 నిమిషాలు.
		ఒబెరాన్	01 నిమిషం. లీ ఆన్ లీ
11	పండ్లు మరియు మొక్కల పెరుగుదల నియంత్రకం	ఫ్లోనోఫెక్స్	30-40 నిమిషాలు. ఎకరానికి లీ

రూట్ నాట్ నెమటోడ్ - దీని కారణంగా, వంకాయల వేర్లపై ముడులు ఏర్పడి మొక్క పెరుగుదలను కుంటుపరుస్తాయి మరియు దిగుబడిని ప్రతికూలంగా ప్రభావితం చేస్తాయి. దీనిని నివారించడానికి, పంట భ్రమణాన్ని అవలంబించండి మరియు ఎకరానికి 4 కిలోల ఫెర్టెరా (డ్యూపాంట్) ను మట్టిలో కలపండి.

చిన్న ఆకు వ్యాధి - ఇది మైకోప్లాస్మా వల్ల వంకాయలో వచ్చే వినాశకరమైన వ్యాధి. ఈ వ్యాధి వ్యాప్తి కారణంగా, ఆకులు చిన్నవిగా ఉండి, కాండం మీద సమాహారంలో పెరుగుతున్నట్లు కనిపిస్తాయి. వ్యాధిగ్రస్తమైన మొక్క మొత్తం ఒక పొదలా కనిపిస్తుంది. అటువంటి మొక్కలపై పండ్లు ఏర్పడవు. వ్యాధిగ్రస్తమైన మొక్కలను పీకి నాశనం చేయాలి. ఈ వ్యాధి ఆకుపచ్చ పురుగులు (జాసిడ్స్) ద్వారా వ్యాపిస్తుంది, కాబట్టి వాటిని నివారించండి.

నీటిపారుదల: వేసవిలో ప్రతి 3-4 రోజులకు మరియు శీతాకాలంలో ప్రతి 12-15 రోజులకు నీరు పెట్టండి. ఎక్కువ దిగుబడి పొందడానికి సరైన సమయంలో నీరు పెట్టడం చాలా ముఖ్యం. పొగమంచు ఉన్న రోజుల్లో పంటలను రక్షించడానికి, నేలలో తేమను కాపాడుకోండి మరియు క్రమం తప్పకుండా నీరు పెట్టండి. వంకాయ పంటలు నీటి స్తబ్ధతను తట్టుకోవు, కాబట్టి పంటలో నీటి స్తబ్ధతను నివారించండి.

కలుపు నియంత్రణ:- కలుపు నియంత్రణ, మంచి పెరుగుదల మరియు సరైన గాలి ప్రసరణ కోసం రెండు నుండి నాలుగు కలుపు తీయండి. మొక్కలను నల్లటి పాలిథిన్ పీట్ తో కప్పండి, ఇది కలుపు పెరుగుదలను తగ్గిస్తుంది మరియు నేల ఉష్ణోగ్రతను కూడా నిర్వహిస్తుంది.

పంట కోత:- వంకాయలు పండే ముందు, అంటే పండు తగిన పరిమాణం మరియు రంగుకు చేరుకున్నప్పుడు కోయడం జరుగుతుంది. మార్కెట్లో మంచి ధర రావాలంటే, పండు మృదువుగా మరియు ఆకర్షణీయమైన రంగులో ఉండాలి.

గమనిక:- పైన పేర్కొన్న సమాచారమంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగాల ఆధారంగా ఇవ్వబడింది. పైన పేర్కొన్న సమాచారం వేర్వేరు ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణాలు, నేల రకాలు మరియు రుతువుల కారణంగా మారవచ్చు.

ಪ್ರಭೇದಗಳು:- ಕಾಮಧೇನು, ಮಂಜುಷಾ, ಕೇತನ್, ಹರ್ಷಲ್, ಗ್ರೀನ್ ಗೋರಿ, ಜಯಂತ, ಗಾಯತ್ರಿ, ಗ್ರೀನ್ ಗರಿಮಾ, ಚೈತನ್ಯ, ಸುರುಚಿ, ಆಯ್ಕೆ-09, ಅಮಿತಾಭ, ಕಿಸ್ಕತ್, ಜಮ್ಮಂತ್, ಸುಮಿತ್, ಶ್ವೇತಾಂಬರ, ಅಭಯ, ಅಕ್ಷಯ, ಅಮೃತಾ, ಮೋಹಿತ, ಎಮ್‌ಆರ್‌ಬಿ-8, ಎಮ್‌ಆರ್‌ಬಿ-17, ಸೌರಭ, ಕನ್ಯಾ, ಗ್ರೀನ್ ಪರಾಸ್, ಕ್ರಾಸ್ ಕ್ಲೀನ್, ಗ್ರೀನ್ ಕ್ಲಸ್ಟರ್, ಗ್ರೀನ್ ಫಿಶರಿ, ಬಹಾರ್.

ಸೂಕ್ತವಾದ ಹವಾಮಾನ:- ಬದನೆಕಾಯಿ ಕೃಷಿಯಿಂದ ಗರಿಷ್ಠ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಪಡೆಯಲು, ದೀರ್ಘ ಮತ್ತು ಬೆಚ್ಚಗಿನ ಋತುವಿನ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಬೀಜಗಳ ಉತ್ತಮ ಮೊಳಕೆಯೊಡೆಯುವಿಕೆಗೆ, 25 ಡಿಗ್ರಿ ಸೆಲ್ಸಿಯಸ್ ತಾಪಮಾನವು ಸೂಕ್ತವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯಗಳ ಉತ್ತಮ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ, ಸರಾಸರಿ 13 ರಿಂದ 21 ಡಿಗ್ರಿ ಸೆಲ್ಸಿಯಸ್ ತಾಪಮಾನವು ಉತ್ತಮವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಮಣ್ಣಿನ ಆಯ್ಕೆ:- ಬದನೆಕಾಯಿ ಬೆಳೆ ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿರುವುದರಿಂದ, ಇದನ್ನು ವಿವಿಧ ರೀತಿಯ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯಬಹುದು. ಇದು ದೀರ್ಘಾವಧಿಯ ಬೆಳೆಯಾಗಿರುವುದರಿಂದ, ಉತ್ತಮ ಒಳಚರಂಡಿ ಹೊಂದಿರುವ ಫಲವತ್ತಾದ ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಗೋಡು ಮಣ್ಣು ಸೂಕ್ತವಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಉತ್ತಮ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ನೀಡುತ್ತದೆ. ಆರಂಭಿಕ ಬೆಳೆ ಹಗುರವಾದ ಮಣ್ಣು ಸೂಕ್ತವಾಗಿದ್ದು, ಜೇಡಿಮಣ್ಣಿನ ಮತ್ತು ತೇವಾಂಶವುಳ್ಳ ಅಥವಾ ಜೇಡಿಮಣ್ಣಿನ ಮಣ್ಣು ಹೆಚ್ಚಿನ ಇಳುವರಿ ಸೂಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಬೆಳೆ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ pH 5.5-6.6 ಆಗಿರಬೇಕು.

ಬೀಜೋಪಚಾರ:- ಪ್ರತಿ ಕಿಲೋಗ್ರಾಂ ಬೀಜಕ್ಕೆ 01 ಗ್ರಾಂ ಕಾರ್ಬೆಂಡಿಜಿಮ್ (ಬಾವಿಸ್ಪಿನ್) ಅನ್ನು ಹಾಕಿ.

ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ:- ಬದನೆಕಾಯಿ ಬೆಳೆಯನ್ನು ವರ್ಷಕ್ಕೆ ಮೂರು ಬಾರಿ ತೆಗೆಯಬಹುದು, ಇದರಿಂದ ವರ್ಷವಿಡೀ ಬದನೆಕಾಯಿ ಲಭ್ಯವಿರುತ್ತದೆ. ಮಳೆಗಾಲದ ಬೆಳೆ- ನರ್ಸರಿ ತಯಾರಿಸಲು ಸೂಕ್ತ ಸಮಯ ಫೆಬ್ರವರಿ ನಿಂದ ಮಾರ್ಚ್ ಮತ್ತು ಮುಖ್ಯ ಹೊಲದಲ್ಲಿ ನಾಟಿ ಮಾಡಲು ಸೂಕ್ತ ಸಮಯ ಮಾರ್ಚ್ ನಿಂದ ಏಪ್ರಿಲ್. ಶರತ್ಕಾಲದ ಬೆಳೆ- ನರ್ಸರಿ ತಯಾರಿಸಲು ಸೂಕ್ತ ಸಮಯ ಜೂನ್ ನಿಂದ ಜುಲೈ ಮತ್ತು ಮುಖ್ಯ ಹೊಲದಲ್ಲಿ ನಾಟಿ ಮಾಡಲು ಸೂಕ್ತ ಸಮಯ ಜುಲೈ ನಿಂದ ಆಗಸ್ಟ್. ವಸಂತಕಾಲ - ನರ್ಸರಿ ತಯಾರಿಸಲು ಸೂಕ್ತ ಸಮಯ ಡಿಸೆಂಬರ್ ಮತ್ತು ಮುಖ್ಯ ಹೊಲದಲ್ಲಿ ನಾಟಿ ಮಾಡಲು ಸೂಕ್ತ ಸಮಯ ಡಿಸೆಂಬರ್ ನಿಂದ ಜನವರಿ.

ಬೀಜದ ಪ್ರಮಾಣ:- ಒಂದು ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ನಲ್ಲಿ ನಾಟಿ ಮಾಡಲು 150 ರಿಂದ 200 ಗ್ರಾಂ ಬೀಜಗಳು ಬೇಕಾಗುತ್ತವೆ.
ಅಂತರ :- ಎರಡು ಸಾಲುಗಳಲ್ಲಿ 90 ಸೆಂ.ಮೀ; ಎರಡು ಗಿಡಗಳಲ್ಲಿ ೬೦-೬೫ ಸೆಂ.ಮೀ.

ಗೊಬ್ಬರ ಮತ್ತು ಗೊಬ್ಬರ:- ಹೊಲವನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವಾಗ, ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 25 ರಿಂದ 30 ಟನ್ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಸಗಣೆ ಗೊಬ್ಬರ ಅಥವಾ ಕಾಂಪೋಸ್ಟ್ ಅನ್ನು ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಮಿಶ್ರಣ ಮಾಡಿ.

ಇಲ್ಲ.	ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ ರಾಸಾಯನಿಕ ಗೊಬ್ಬರಗಳು	ಸಾರಜನಕ (ಕೆಜಿ)	ರಂಜಕ (ಕೆಜಿ)	ಪೊಟ್ಯಾಶ್ (ಕೆಜಿ)
1	ಬಿತ್ತನೆ ಪೂರ್ವ	50	100	100
2	ಕಸಿ ಮಾಡಿದ 25 ದಿನಗಳ ನಂತರ	50	00	00
3	ಹೊಬ್ಬರವ ಮೊದಲು	50	00	00
4	ಮೊದಲ ಸುಗ್ಗಿಯ ನಂತರ	50	00	00
	ಒಟ್ಟು	200	100	100

ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣ ರಾಸಾಯನಿಕ ಔಷಧಗಳು, ಪ್ರಮಾಣ ಮತ್ತು ಸಮಯ
ಎಕರೆಗೆ 4 ಕೆಜಿ ಫರ್ಟಿರಾ (ಡುಪಾಂಡ್) ಅಥವಾ 2.5 ಕೆಜಿ ವರ್ಟಿಕೊ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) ಅನ್ನು ಗೊಬ್ಬರದೊಂದಿಗೆ ಬಳಸುವುದರಿಂದ 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ರಸ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ಸಿಗುತ್ತದೆ.

ಇಲ್ಲ.	ರೋಗಗಳು/ ಕೀಟಗಳು	ನಿಯಂತ್ರಣ	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್ ನೀರಿಗೆ ಪ್ರಮಾಣ
1	ರಿಕ್ಟಾಗಳು	ಅಲಿಯಟ್	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 2 ಗ್ರಾಂ
2	ಎಲೆಗಳ ಮೇಲೆ ಕಲೆಗಳು	ನೆಟಿಯೊ	15 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 8 ಗ್ರಾಂ.
		ಎಂಟರ್‌ಕಾಲ್ ಮಾಡಿ	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 2 ಗ್ರಾಂ
3	ಹಣ್ಣಿನ ಕೊಳೆತ	ನೆಟಿಯೊ	15 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 8 ಗ್ರಾಂ
4	ಎಲೆಗಳ ಮೇಲೆ ಬಿಳಿ ಚುಕ್ಕೆಗಳು	ಬೆಲೆಟನ್	ಎಕರೆಗೆ ೧೨೫ ಗ್ರಾಂ.
5	ಹಣ್ಣು ಮತ್ತು ಕೊಂಬೆಗಳ ಮೇಲೆ ಪರಿಣಾಮ ಬೀರುವ ಕೀಟ	ಪ್ರೊಫೆನೋಫೋಸ್	01 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ
		ಖ್ಯಾತಿ	04 ನಿಮಿಷ. ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 15 ಲೀಟರ್
6	ಮೀಲಿಬಗಗಳು	ಎಡ್ಜೋರ್	ಎಕರೆಗೆ 40 ಗ್ರಾಂ.
7	ಗಿಡಹೇನುಗಳು, ಹಸಿರು ಎಣ್ಣೆ (ಜೆಸ್ಟಿಡ್)	ಕಾನ್ಸಿಡರ್	04 ನಿಮಿಷ. ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 15 ಲೀಟರ್
		ಆಕ್ಸಾ	15 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 06 ಗ್ರಾಂ
8	ಫ್ರಿಪ್ಸ್	ರಿಜೆಂಟ್	02 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ
9	ಬಿಳಿ ನೋಣ	ಲಾನೋ	02 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ.
		ಪೆಗಾಸಸ್	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 01 ಗ್ರಾಂ
10	ಇರಬಹುದು	ಸಲ್ಫರ್	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ
		ಮಾಸ್ಟರ್	02 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ.
		ಒಬೆರಾನ್	01 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ
11	ಹಣ್ಣು ಮತ್ತು ಸಸ್ಯಗಳ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ನಿಯಂತ್ರಕ	ಪ್ರಾನೋಫಿಕ್ಸ್	30-40 ನಿಮಿಷಗಳು. ಎಕರೆಗೆ ಲೀ

ಬೇರು ಗಂಟು ನೆಮಟೋಡ್ - ಇದರಿಂದಾಗಿ, ಬದನೆಕಾಯಿಯ ಬೇರುಗಳ ಮೇಲೆ ಗಂಟುಗಳು ರೂಪುಗೊಳ್ಳುತ್ತವೆ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯಗಳ ಬೆಳವಣಿಗೆ ನಿಂತು ಇಳುವರಿಯ ಮೇಲೆ ಪ್ರತಿಫಲ ಪರಿಣಾಮ ಬೀರುತ್ತದೆ. ಇದನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟಲು, ಬೆಳೆ ಸರದಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಿ ಮತ್ತು ಪ್ರತಿ ಎಕರೆಗೆ 4 ಕೆಜಿ ಫರ್ಟಿರಾ (ಡುಪಾಂಡ್) ಅನ್ನು ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಮಿಶ್ರಣ ಮಾಡಿ. ಸಣ್ಣ ಎಲೆ ರೋಗ-ಇದು ಮೈಕೋಪ್ಲಾಸ್ಮಾದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಬದನೆಕಾಯಿಯ ವಿನಾಶಕಾರಿ ರೋಗ. ಈ ರೋಗದ ಹರಡುವಿಕೆಯಿಂದಾಗಿ, ಎಲೆಗಳು ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುತ್ತವೆ ಮತ್ತು ಕಾಂಡದ ಮೇಲೆ ಗೊಂಚಲುಗಳಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ರೋಗಪೀಡಿತ ಸಸ್ಯವೆಲ್ಲ ಪೊದೆಯಂತೆ ಕಾಣುತ್ತದೆ. ಅಂತಹ ಸಸ್ಯಗಳ ಮೇಲೆ ಹಣ್ಣುಗಳು ರೂಪುಗೊಳ್ಳುವುದಿಲ್ಲ. ರೋಗಪೀಡಿತ ಸಸ್ಯವನ್ನು ಬೇರು ಸಹಿತ ಕಿತ್ತು ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕು. ಈ ರೋಗವು ಹಸಿರು ಮಿಟೆ (ಜಾಸಿಡ್) ನಿಂದ ಹರಡುತ್ತದೆ, ಆದ್ದರಿಂದ ಅದನ್ನು ತಡೆಯಿರಿ.

ನೀರಾವರಿ :- ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ 3-4 ದಿನಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ ಮತ್ತು ಚಳಿಗಾಲದಲ್ಲಿ 12-15 ದಿನಗಳ ನಂತರ ನೀರು ಹಾಕಿ. ಹೆಚ್ಚಿನ ಇಳುವರಿ ಪಡೆಯಲು ಸರಿಯಾದ ಸಮಯಕ್ಕೆ ನೀರು ಹಾಕುವುದು ಬಹಳ ಮುಖ್ಯ. ಮಂಜಿನ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಲು, ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ತೇವಾಂಶವನ್ನು ಕಾಪಾಡಿಕೊಳ್ಳಿ ಮತ್ತು ನಿಯಮಿತವಾಗಿ ನೀರು ಹಾಕಿ. ಬದನೆಕಾಯಿ ಬೆಳೆ ನಿಂತ ನೀರನ್ನು ಸಹಿಸುವುದಿಲ್ಲವಾದ್ದರಿಂದ, ಬೆಳೆಯಲ್ಲಿ ನೀರು ನಿಲ್ಲುವುದನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿ.

ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ :- ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ, ಉತ್ತಮ ಬೆಳವಣಿಗೆ ಮತ್ತು ಸರಿಯಾದ ಗಾಳಿ ಬೀಸುವಿಕೆಗಾಗಿ ಎರಡರಿಂದ ನಾಲ್ಕು ಕಳೆಗಳನ್ನು ಕೀಳಬೇಕು. ಕಳೆಗಳ ಬೆಳವಣಿಗೆಯನ್ನು ಕಡಿಮೆ ಮಾಡುವ ಮತ್ತು ಮಣ್ಣಿನ ಉಷ್ಣತೆಯನ್ನು ಕಾಯ್ದುಕೊಳ್ಳುವ ಕಪ್ಪು ಪಾಲಿಥೀನ್ ಹಾಳೆಗಳಿಂದ ಸಸ್ಯಗಳನ್ನು ಮುಚ್ಚಿ.

ಕೊಯ್ಲು:- ಬದನೆಕಾಯಿ ಹಣ್ಣಾಗುವ ಸ್ವಲ್ಪ ಮೊದಲು, ಅಂದರೆ ಹಣ್ಣು ಸರಿಯಾದ ಗಾತ್ರ ಮತ್ತು ಬಣ್ಣವನ್ನು ಪಡೆದಾಗ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಮಾರುಕಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮ ದರ ಸಿಗಬೇಕಾದರೆ, ಹಣ್ಣು ನಯವಾಗಿರಬೇಕು ಮತ್ತು ಅಕರ್ಷಕ ಬಣ್ಣದ್ದಾಗಿರಬೇಕು.

ಗಮನಿಸಿ:- ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿವಿಧ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುವಿನಲ್ಲಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

বেণ্ডেনা

জাত:- কামধেনু, মঞ্জুৰা, কেতন, হৰ্ষল, সেউজ গৌৰৱ, জয়ন্ত, গায়ত্ৰী, সেউজ গৰিমা, চৈতন্য, সুকুচি, বাছনি-০৯, অমিতাভ, কিছুমত, জামৰন্ত, সুমিত, স্বৈতাম্বৰ, অভয়, অক্ষয়, অম্পালী, মোহিত, এম আৰ বি-১৭, নিশা, বিজিতা, তুহাৰ, বাছনি-৭৮৬, সৌৰভ, কানহেয়া, গ্ৰীণ পাৰস, ক্ৰছ কুইন, গ্ৰীণ ক্লাষ্টাৰ, গ্ৰীণ ফিচাৰি, বাহাৰ।

উপযুক্ত জলবায়ু:- ব্ৰিঞ্জাল খেতিৰ পৰা সৰ্বাধিক উৎপাদন পাবলৈ দীঘলীয়া আৰু উষ্ণ ঋতুৰ প্ৰয়োজন হয়। বীজৰ ভাল অংকুৰণৰ বাবে ২৫ ডিগ্ৰী চেলছিয়াছ উষ্ণতা উপযুক্ত বুলি ধৰা হয় আৰু গছৰ ভাল বৃদ্ধিৰ বাবে ১৩ৰ পৰা ২১ ডিগ্ৰী চেলছিয়াছৰ গড় উষ্ণতা সৰ্বোত্তম বুলি ধৰা হয়।

মাটিৰ নিৰ্বাচন:- ব্ৰঞ্জাল শস্য যিহেতু কঠিন, গতিকে ইয়াক বিভিন্ন প্ৰকাৰৰ মাটিত খেতি কৰিব পাৰি। ই দীৰ্ঘদিনীয়া শস্য, সেয়েহে ভাল পানী নিষ্কাশন থকা উৰ্বৰ বালিচহীয়া লোম মাটি উপযুক্ত আৰু ভাল উৎপাদন দিয়ে। পাতল মাটি আগতীয়া শস্যৰ বাবে উপযোগী আৰু মাটিৰ আৰু আৰ্দ্ৰ বা মাটিৰ মাটি অধিক উৎপাদনৰ বাবে উপযোগী। শস্যৰ বৃদ্ধিৰ বাবে পি এইচ ৫.৫-৬.৬ হ'ব লাগে।

বীজৰ শোধন:- প্ৰতি কিলোগ্ৰাম বীজত ০১ গ্ৰাম হাৰভ কাৰ্বেণ্ডাজিম (Bavistin) প্ৰয়োগ কৰিব লাগে।

বীজ সিঁচাৰ সময়:- ব্ৰঞ্জাল শস্য বছৰত তিনিবাৰকৈ লব পাৰি, যাতে বছৰজুৰি ব্ৰঞ্জাল পোৱা যায়। বাৰিষা কালৰ শস্য- নাৰ্চাৰী প্ৰস্তুত কৰাৰ উপযুক্ত সময় ফেব্ৰুৱাৰীৰ পৰা মাৰ্চলৈ আৰু মূল পথাৰত ৰোপণৰ উপযুক্ত সময় মাৰ্চৰ পৰা এপ্ৰিললৈ। শৰৎকালীন শস্য- নাৰ্চাৰী প্ৰস্তুত কৰাৰ উপযুক্ত সময় জুনৰ পৰা জুলাইলৈ আৰু মূল পথাৰত ৰোপণৰ উপযুক্ত সময় জুলাইৰ পৰা আগষ্টলৈকে। বসন্তৰ সময় - নাৰ্চাৰী প্ৰস্তুত কৰাৰ উপযুক্ত সময় ডিচেম্বৰ আৰু মূল পথাৰত ৰোপণৰ উপযুক্ত সময় ডিচেম্বৰৰ পৰা জানুৱাৰীলৈ।

বীজৰ পৰিমাণ:- এক হেক্টৰত ৰোপণৰ বাবে ১৫০ৰ পৰা ২০০ গ্ৰাম বীজৰ প্ৰয়োজন হয়।

ব্যৱধান :- দুটা শাৰীত ৯০ চে.মি.; দুটা গছত ৬০-৬৫ চে.মি.

গোবৰ আৰু সাৰ:- পথাৰ প্ৰস্তুত কৰাৰ সময়ত প্ৰতি হেক্টৰ মাটিত ২৫ৰ পৰা ৩০ টন পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰ বা পচন সাৰ মিহলাই দিব লাগে।

নং।	প্ৰতি হেক্টৰত ৰাসায়নিক সাৰ	নাইট্ৰজেন (কিলোগ্ৰাম)	ফছফৰাছ (কিলোগ্ৰাম)	পটাছ (কিলোগ্ৰাম)
1	বীজ সিঁচাৰ পূৰ্বে	50	100	100
2	ৰোপণ কৰাৰ ২৫ দিনৰ পিছত	50	00	00
3	ফুল ফুলাৰ আগতে	50	00	00
4	প্ৰথম চপোৱাৰ পিছত	50	00	00
	মুঠ	200	100	100

ৰোগ আৰু কীট-পতংগ নিয়ন্ত্ৰণ ৰাসায়নিক ঔষধ, পৰিমাণ আৰু সময়

সাৰৰ সৈতে প্ৰতি একৰত ৪ কিলোগ্ৰাম ফেৰটেৰা (ডুপণ্ড) বা ভাটিকো (চিপ্লেণ্ট) ২.৫ কেজি প্ৰতি একৰ ব্যৱহাৰ কৰিলে ২১ দিনলৈ বস চুহি খোৱা পোক-পৰুৱাৰ পৰা সুৰক্ষা পোৱা যায়।

নং।	ৰোগ/ কীট-পতংগ	নিয়ন্ত্ৰণ	প্ৰতি লিটাৰ পানীত পৰিমাণ
1	ৰিকেট	এলিয়েট	প্ৰতি লিটাৰত ২ গ্ৰাম
2	পাতত দাগ	নাটিঅ'	প্ৰতি ১৫ লিটাৰত ৮ গ্ৰাম।
		এণ্টাৰকল কৰক	প্ৰতি লিটাৰত ২ গ্ৰাম
3	ফলৰ পচি যোৱা	নাটিঅ'	প্ৰতি ১৫ লিটাৰত ৮ গ্ৰাম
4	পাতত বগা দাগ	বেলেটন	প্ৰতি একৰত ১২৫ গ্ৰাম।
5	ফল আৰু ডালৰ কীট	প্ৰফেনোফছ	০১ মিনিট। লি প্ৰতি লি
		খ্যাতি	০৪ মিনিট। প্ৰতি লিটাৰত ১৫ লিটাৰ
6	মিলিবাগছ	এডমাইব	প্ৰতি একৰত ৪০ গ্ৰাম।
7	এফিড, সেউজীয়া তেল (jessid)	কনফিডৰ	০৪ মিনিট। প্ৰতি লিটাৰত ১৫ লিটাৰ
		এক্টা	১৫ লিটাৰত ০৬ গ্ৰাম
8	থ্ৰিপ	ৰিজেন্ট	০২ মিনিট। লি প্ৰতি লি
9	বগা মাখি	লানো	০২ মিনিট। লি প্ৰতি লি।
		পেগাছাছ	প্ৰতি লিটাৰত ০১ গ্ৰাম
10	হ'ব পাৰে	চালফাৰ	প্ৰতি লিটাৰত ০২ গ্ৰাম
		মেজিষ্টাৰ	০২ মিনিট। লি প্ৰতি লি।
		ওবেৰন	০১ মিনিট। লি প্ৰতি লি
11	ফল আৰু উদ্ভিদৰ বৃদ্ধি নিয়ন্ত্ৰক	প্লেনোফিক্স	৩০-৪০ মিনিট। প্ৰতি একৰত লি

শিপাৰ গাঁঠি নেমাটোড - ইয়াৰ বাবে ব্ৰঞ্জালৰ শিপাত গাঁঠি গঠন হয় আৰু গছৰ বৃদ্ধি বন্ধ হৈ পৰে আৰু উৎপাদনত বিৰূপ প্ৰভাৱ পৰে। ইয়াৰ প্ৰতিৰোধৰ বাবে শস্য আৱৰ্তন গ্ৰহণ কৰি প্ৰতি একৰ মাটিত ৪ কিলোগ্ৰাম ফেৰটেৰা (ডুপণ্ড) মিহলাই লওক।

সৰু পাতৰ ৰোগ-এইটো মাইকোপ্লাজমাৰ ফলত হোৱা ব্ৰঞ্জালৰ ধ্বংসাত্মক ৰোগ। এই ৰোগৰ প্ৰাদুৰ্ভাৱৰ বাবে পাতবোৰ সৰু হৈ থাকে আৰু ঠাৰিৰ ওপৰত থোপাকৈ বাঢ়ি অহা দেখা যায়। গোটেই ৰোগগ্ৰস্ত গছজোপা জোপোহাৰ দৰে দেখা যায়। এনে গছত ফলৰ গঠন নহয়। ৰোগীয়া উদ্ভিদ উভালি নষ্ট কৰিব লাগে। এই ৰোগ সেউজীয়া মাইট (Jassid) দ্বাৰা বিয়পে, গতিকে ইয়াক প্ৰতিৰোধ কৰক।

জলসিঞ্চন :- গ্ৰীষ্মকালত প্ৰতি ৩-৪ দিনৰ মূৰে মূৰে আৰু শীতকালত ১২-১৫ দিনৰ পিছত পানী দিব লাগে। অধিক উৎপাদন পাবলৈ সঠিক সময়ত পানী প্ৰয়োগ কৰাটো অতি প্ৰয়োজনীয়। কুঁৱলীৰ দিনত শস্যক সুৰক্ষিত কৰিবলৈ মাটিত আৰ্দ্ৰতা বজাই ৰাখিব লাগে আৰু নিয়মিতভাৱে পানী দিব লাগে। শস্যত স্থবিৰ পানী পৰিহাৰ কৰক, কিয়নো ব্ৰঞ্জাল শস্যই স্থবিৰ পানী সহনশীল নহয়।

অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ :- অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ, ভাল বৃদ্ধি আৰু সঠিক বায়ু চলাচলৰ বাবে দুইৰ পৰা চাৰিটা অপতৃণ কৰাব লাগে। গছ-গছনি ক'লা পলিথিনৰ চাদৰেৰে ঢাকি দিব লাগে যিয়ে অপতৃণৰ বৃদ্ধি হ্ৰাস কৰে আৰু মাটিৰ উষ্ণতাও বজাই ৰাখে।

চপোৱা:- ফল পকিবলৈ অলপ আগতে, যেতিয়া ফলৰ আকাৰ আৰু ৰং সঠিক হয় তেতিয়া ব্ৰঞ্জাল চপোৱা হয়। বজাৰত ভাল ৰেট পাবলৈ ফলবোৰ মসৃণ আৰু আকৰ্ষণীয় ৰঙৰ হ'ব লাগে।

বি:দ্ৰ:- ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্ৰত কৰা পৰীক্ষাৰ ভিত্তিত কৰা হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন জলবায়ু, মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে ওপৰৰ তথ্যসমূহ ভিন্ন হ'ব পাৰে।

বেগুন

জাত:- কামধেনু, মঞ্জুশা, কেতন, হর্ষল, সবুজ গৌরব, জয়ন্ত, গায়ত্রী, সবুজ গরিমা, চৈতন্য, সুরুচি, নির্বাচন-০৯, অমিতাভ, কিসমত, জামবন্ত, সুমিত, স্বৈতাস্বর, অভয়, অক্ষয়, আম্রপালি, মোহিত, এমআরবি-১৭, নিশাহার, তুষার-৭, বিষাক্ত নির্বাচন কানহেয়া, সবুজ পারস, ক্রস কুইন, গ্রিন ক্লাস্টার, গ্রিন ফিশারী, বাহার।

উপযুক্ত জলবায়ু:- বেগুন চাষ থেকে সর্বাধিক উৎপাদন পেতে, দীর্ঘ এবং উষ্ণ মৌসুম প্রয়োজন। বীজের ভালো অঙ্কুরোদগমের জন্য, ২৫ ডিগ্রি সেলসিয়াস তাপমাত্রা উপযুক্ত বলে মনে করা হয় এবং গাছের ভালো বৃদ্ধির জন্য, গড়ে ১৩ থেকে ২১ ডিগ্রি সেলসিয়াস তাপমাত্রা সর্বোত্তম বলে মনে করা হয়।

মাটি নির্বাচন:- যেহেতু বেগুন শক্ত, তাই এটি বিভিন্ন ধরণের মাটিতে চাষ করা যেতে পারে। এটি একটি দীর্ঘমেয়াদী ফসল, তাই ভালো নিষ্কাশন ব্যবস্থা সহ উর্বর বেলে দোআঁশ মাটি উপযুক্ত এবং ভালো ফলন দেয়। হালকা মাটি আগাম ফসলের জন্য উপযুক্ত এবং এঁটেল এবং আর্দ্র বা এঁটেল মাটি উচ্চ ফলনের জন্য উপযুক্ত। ফসলের বৃদ্ধির জন্য pH ৫.৫-৬.৬ হওয়া উচিত।

বীজ শোধন:- প্রতি কেজি বীজে ০১ গ্রাম হারে কার্বেনডাজিম (বাভিস্টিন) প্রয়োগ করুন।

বপনের সময়:- বেগুন ফসল বছরে তিনবার নেওয়া যেতে পারে, যাতে সারা বছর ধরে বেগুন পাওয়া যায়। বর্ষাকালীন ফসল- নার্সারি তৈরির উপযুক্ত সময় ফেব্রুয়ারি থেকে মার্চ এবং মূল জমিতে রোপণের উপযুক্ত সময় মার্চ থেকে এপ্রিল। শরৎকালীন ফসল- নার্সারি তৈরির উপযুক্ত সময় জুন থেকে জুলাই এবং মূল জমিতে চারা রোপণের উপযুক্ত সময় জুলাই থেকে আগস্ট। বসন্তকাল - নার্সারি তৈরির উপযুক্ত সময় ডিসেম্বর এবং মূল জমিতে চারা রোপণের উপযুক্ত সময় ডিসেম্বর থেকে জানুয়ারি।

বীজের পরিমাণ:- এক হেক্টরে রোপণের জন্য ১৫০ থেকে ২০০ গ্রাম বীজের প্রয়োজন হয়।

ব্যবধান :- দুই সারিতে ৯০ সেমি; দুটি গাছে ৬০-৬৫ সেমি।

সার এবং সার:- ক্ষেত প্রস্তুত করার সময়, প্রতি হেক্টরে মাটিতে ২৫ থেকে ৩০ টন পচা গোবর সার বা কম্পোস্ট মিশিয়ে দিন।

ন।	প্রতি হেক্টরে রাসায়নিক সার	নাইট্রোজেন (কেজি)	ফসফরাস (কেজি)	পটাশ (কেজি)
1	বপনের আগে	50	100	100
2	চারা রোপণের ২৫ দিন পর	50	00	00
3	ফুল ফোটার আগে	50	00	00
4	প্রথম ফসল কাটার পর	50	00	00
	মোট	200	100	100

রোগ ও কীটপতঙ্গ নিয়ন্ত্রণ রাসায়নিক ওষুধ, পরিমাণ এবং সময়

প্রতি একরে ফারটেরা (ডুপন্ড) ৪ কেজি অথবা প্রতি একরে ভাটিকো (সিনজেন্টা) ২.৫ কেজি সারের সাথে ব্যবহার করলে ২১ দিনের জন্য রস চুষে নেওয়া পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা পাওয়া যায়।

ন।	রোগ/পোকামাকড়	নিয়ন্ত্রণ	প্রতি লিটার পানিতে পরিমাণ
1	রিকেটস	অ্যালিয়েট	প্রতি লিটারে ২ গ্রাম
2	পাতায় দাগ	ন্যাটিও	প্রতি ১৫ লিটারে ৮ গ্রাম।
		এন্টারকল	প্রতি লিটারে ২ গ্রাম
3	ফলের পচা রোগ	ন্যাটিও	প্রতি ১৫ লিটারে ৮ গ্রাম
4	পাতায় সাদা দাগ	বেলায়টন	প্রতি একরে ১২৫ গ্রাম।
5	ফল ও শাখার পোকামাকড়	প্রোফেনোফোস	০১ মিনিট। লি পার লি
		খ্যাতি	০৪ মিনিট। প্রতি লিটারে ১৫ লিটার
6	মিলিবাগ	এডমায়ার	প্রতি একরে ৪০ গ্রাম।
7	জাবপোকা, সবুজ তেল (জেসিড)	কনফিডার	০৪ মিনিট। প্রতি লিটারে ১৫ লিটার
		অ্যাক্টা	প্রতি ১৫ লিটারে ০৬ গ্রাম
8	থ্রিপ	রিজেন্ট	০২ মিনিট। লি পার লি
9	সাদা মাছি	লানো	০২ মিনিট। লি প্রতি লি।
		পেগাসাস	০১ গ্রাম প্রতি লিটার
10	হতে পারে	সালফার	০২ গ্রাম প্রতি লিটার
		ম্যাজিস্টার	০২ মিনিট। লি প্রতি লি।
		ওবেরন	০১ মিনিট। লি পার লি
11	ফল এবং উদ্ভিদ বৃদ্ধি নিয়ন্ত্রক	প্ল্যানোফিক্স	৩০-৪০ মিনিট। প্রতি একর লি

শিকড়ের নট নেমাটোড - এর কারণে, বেগুনের শিকড়ে গিঁট তৈরি হয় এবং গাছের বৃদ্ধি বন্ধ হয়ে যায় এবং ফলন বিরূপভাবে প্রভাবিত হয়। এটি প্রতিরোধ করার জন্য, ফসলের আবর্তন গ্রহণ করুন এবং প্রতি একর মাটিতে ৪ কেজি ফেরটেরা (ডুপন্ড) মিশিয়ে দিন।

ছোট পাতার রোগ - এটি মাইকোপ্লাজমা দ্বারা সৃষ্ট বেগুনের একটি ধ্বংসাত্মক রোগ। এই রোগের প্রাদুর্ভাবের কারণে, পাতা ছোট থাকে এবং কাণ্ডে থোকায় থোকায় বেড়ে উঠতে দেখা যায়। সম্পূর্ণ রোগাক্রান্ত গাছটি দেখতে ঝোপের মতো। এই ধরনের গাছে ফল হয় না। রোগাক্রান্ত গাছটি উপড়ে ফেলে ধ্বংস করতে হবে। এই রোগটি সবুজ মাইট (জ্যাসিড) দ্বারা ছড়ায়, তাই এটি প্রতিরোধ করুন।

সেচ:- গ্রীষ্মকালে প্রতি ৩-৪ দিন অন্তর এবং শীতকালে ১২-১৫ দিন অন্তর জল দিন। অধিক ফলন পেতে হলে সঠিক সময়ে পানি প্রদান করা খুবই গুরুত্বপূর্ণ। কুয়াশাচ্ছন্ন দিনে ফসল রক্ষা করার জন্য, মাটিতে আর্দ্রতা বজায় রাখুন এবং নিয়মিত জল দিন। বেগুনের ফসলে পানি জমে থাকা এড়িয়ে চলুন, কারণ বেগুনের ফসল জমে থাকা পানি সহ্য করে না।

আগাছা নিয়ন্ত্রণ :- আগাছা নিয়ন্ত্রণ, ভালো বৃদ্ধি এবং সঠিক বায়ুচলাচলের জন্য দুই থেকে চারটি আগাছা পরিষ্কার করুন। কালো পলিথিন চাদর দিয়ে গাছপালা ঢেকে দিন যা আগাছার বৃদ্ধি কমায় এবং মাটির তাপমাত্রাও বজায় রাখে।

ফসল তোলা:- ফল পাকার একটু আগে, যখন ফল সঠিক আকার এবং রঙ ধারণ করে, বেগুন কাটা হয়। বাজারে ভালো দাম পেতে হলে ফল মসৃণ এবং আকর্ষণীয় রঙের হতে হবে।

দ্রষ্টব্য:- উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন জলবায়ু, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরোক্ত তথ্যগুলি ভিন্ন হতে পারে।

ਬੈਂਗਣ ਦਾ ਪੌਦਾ

ਕਿਸਮਾਂ:- ਕਾਮਧੇਨੂ, ਮੰਜੂਸ਼ਾ, ਕੇਤਨ, ਹਰਸਲ, ਗੁਨਿ ਗਲੇਰੀ, ਜਯੰਤ, ਗਾਇਤਰੀ, ਹਰੀ ਗਰਿਮਾ, ਚੈਤੀਨਿਆ, ਸ਼ੁਰੂਚੀ, ਚੋਣ-09, ਅਮਿਤਾਭ, ਕਿਸਮਤ, ਜਮਵੰਤ, ਸੁਮਿਤ, ਸਵੇਤੰਬਰ, ਅਭੈ, ਅਕਸ਼ੈ, ਆਮਰਪਾਲੀ, ਮੇਹਿਤ, ਐਮ.ਆਰ.ਬੀ.-17, ਨਿਸ਼ਾਬ-6, ਨਿਸ਼ਾਬ-6, ਨਿਸ਼ਾਬ-6, ਸਿਲੈਕਸਨ-8। ਕਨੂੰਈਆ, ਹਰਾ ਪਾਰਸ, ਕ੍ਰਾਸ ਕੁਈਨ, ਗੁਨਿ ਕਲੱਸਟਰ, ਗੁਨਿ ਫਿਸ਼ਰੀ, ਬਹਾਰ।

ਅਨੁਕੂਲ ਜਲਵਾਯੂ:- ਬੈਂਗਣ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਤੋਂ ਵੱਧ ਤੋਂ ਵੱਧ ਉਤਪਾਦਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ, ਇੱਕ ਲੰਮਾ ਅਤੇ ਗਰਮ ਮੌਸਮ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਬੀਜਾਂ ਦੇ ਚੰਗੇ ਉਗਣ ਲਈ, 25 ਡਿਗਰੀ ਸੈਲਸੀਅਸ ਤਾਪਮਾਨ ਢੁਕਵਾਂ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਪੌਦਿਆਂ ਦੇ ਚੰਗੇ ਵਾਧੇ ਲਈ, ਔਸਤਨ 13 ਤੋਂ 21 ਡਿਗਰੀ ਸੈਲਸੀਅਸ ਤਾਪਮਾਨ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਚੋਣ:- ਕਿਉਂਕਿ ਬੈਂਗਣ ਦੀ ਫ਼ਸਲ ਸਖ਼ਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਇਸਨੂੰ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਕਿਸਮਾਂ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਉਗਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਇੱਕ ਲੰਬੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਫ਼ਸਲ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਚੰਗੇ ਨਿਕਾਸ ਵਾਲੀ ਉਪਜਾਊ ਰੇਤਲੀ ਦੇਮਟ ਮਿੱਟੀ ਢੁਕਵੀਂ ਹੈ ਅਤੇ ਚੰਗੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਹਲਕੀ ਮਿੱਟੀ ਅਗੇਤੀ ਫ਼ਸਲ ਲਈ ਢੁਕਵੀਂ ਹੈ ਅਤੇ ਚੀਕਟੀ ਅਤੇ ਨਮੀ ਵਾਲੀ ਜਾਂ ਚੀਕਟੀ ਮਿੱਟੀ ਵਧੇਰੇ ਝਾੜ ਲਈ ਢੁਕਵੀਂ ਹੈ। ਫ਼ਸਲ ਦੇ ਵਾਧੇ ਲਈ pH 5.5-6.6 ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਬੀਜ ਉਪਚਾਰ:- ਕਾਰਬੋਡਾਜ਼ਿਮ (ਬਾਵਿਸਟਿਨ) 01 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਦੀ ਦਰ ਨਾਲ ਪਾਓ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ:- ਬੈਂਗਣ ਦੀ ਫ਼ਸਲ ਸਾਲ ਵਿੱਚ ਤਿੰਨ ਵਾਰ ਲਈ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਤਾਂ ਜੋ ਬੈਂਗਣ ਸਾਰਾ ਸਾਲ ਉਪਲਬਧ ਰਹਿਣ। ਬਰਸਾਤੀ ਮੌਸਮ ਦੀ ਫ਼ਸਲ- ਨਰਸਰੀ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਦਾ ਢੁਕਵਾਂ ਸਮਾਂ ਫਰਵਰੀ ਤੋਂ ਮਾਰਚ ਹੈ ਅਤੇ ਮੁੱਖ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਲਾਉਣ ਦਾ ਢੁਕਵਾਂ ਸਮਾਂ ਮਾਰਚ ਤੋਂ ਅਪ੍ਰੈਲ ਹੈ। ਪਤਝੜ ਦੀ ਫ਼ਸਲ- ਨਰਸਰੀ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਦਾ ਢੁਕਵਾਂ ਸਮਾਂ ਜੂਨ ਤੋਂ ਜੁਲਾਈ ਹੈ ਅਤੇ ਮੁੱਖ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਪਨੀਰੀ ਲਗਾਉਣ ਦਾ ਢੁਕਵਾਂ ਸਮਾਂ ਜੁਲਾਈ ਤੋਂ ਅਗਸਤ ਹੈ। ਬਸੰਤ ਰੁੱਤ - ਨਰਸਰੀ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਦਾ ਢੁਕਵਾਂ ਸਮਾਂ ਦਸੰਬਰ ਹੈ ਅਤੇ ਮੁੱਖ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਕਰਨ ਦਾ ਢੁਕਵਾਂ ਸਮਾਂ ਦਸੰਬਰ ਤੋਂ ਜਨਵਰੀ ਹੈ।

ਬੀਜ ਦੀ ਮਾਤਰਾ:- ਇੱਕ ਹੈਕਟੇਅਰ ਵਿੱਚ ਬਿਜਾਈ ਲਈ 150 ਤੋਂ 200 ਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਵਿੱਥ :- ਦੋ ਕਤਾਰਾਂ ਵਿੱਚ 90 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ; ਦੋ ਪੌਦਿਆਂ ਵਿੱਚ 60-65 ਸੈ.ਮੀ.

ਖਾਦ ਅਤੇ ਖਾਦ:- ਖੇਤ ਤਿਆਰ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ, ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ 25 ਤੋਂ 30 ਟਨ ਸੜੀ ਹੋਈ ਗਾਂ ਦੀ ਖਾਦ ਜਾਂ ਖਾਦ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਮਿਲਾਓ।

ਨਹੀ।	ਰਸਾਇਣਕ ਖਾਦ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ	ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ)	ਫਾਸਫੋਰਸ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ)	ਪੋਟਾਸ਼ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ)
1	ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ	50	100	100
2	ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਕਰਨ ਤੋਂ 25 ਦਿਨ ਬਾਅਦ	50	00	00
3	ਫੁੱਲ ਆਉਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ	50	00	00
4	ਪਹਿਲੀ ਵਾਢੀ ਤੋਂ ਬਾਅਦ	50	00	00
	ਕੁੱਲ	200	100	100

ਰੋਗ ਅਤੇ ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ ਰਸਾਇਣਕ ਦਵਾਈਆਂ, ਮਾਤਰਾ ਅਤੇ ਸਮਾਂ
ਫਰਟੇਰਾ (ਡੁਪੋਂਡ) 4 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵਰਟੀਕੋ (ਮਿੱਜੋਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ ਵਰਤਣ ਨਾਲ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਰਸ ਜੁਸਟ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

ਨਹੀ।	ਬਿਮਾਰੀਆਂ/ਕੀੜੇ	ਨਿਯੰਤਰਣ	ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਦੀ ਮਾਤਰਾ
1	ਰਿਕਟਸ	ਅਲੀਅਟ	2 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
2	ਪੱਤਿਆਂ 'ਤੇ ਚਟਾਕ	ਨੋਟਿਓ	8 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ 15 ਲੀਟਰ।
		ਐਂਟਰਕਾਲ	2 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
3	ਫਲਾਂ ਦਾ ਸੜਨ	ਨੋਟਿਓ	8 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ 15 ਲੀਟਰ
4	ਪੱਤਿਆਂ 'ਤੇ ਚਿੱਟੇ ਧੱਬੇ।	ਬੇਲੇਟਨ	125 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ।
5	ਫਲਾਂ ਅਤੇ ਟਾਹਣੀਆਂ ਦੇ ਕੀੜੇ	ਪ੍ਰੋਫੇਨੋਫੋਸ	01 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ
		ਪ੍ਰਿਸ਼ੀਪੀ	04 ਮਿੰਟ 15 ਲੀਟਰ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
6	ਮੀਲੀਬੱਗਸ	ਐਡਮਾਇਰ	40 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ।
7	ਐਫੀਡਜ਼, ਹਰਾ ਤੇਲ (ਜੈਸੀਡ)	ਕਨਫੀਡਰ	04 ਮਿੰਟ 15 ਲੀਟਰ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
		ਐਕਟਰਾ	06 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ 15 ਲੀਟਰ
8	ਥਿਪ	ਰੀਜੈਂਟ	02 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ
9	ਚਿੱਟੀ ਮੱਖੀ	ਲੈਨੋ	02 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀ।
		ਪੈਗਾਸਸ	01 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
10	ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ	ਗੰਧਕ	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
		ਮੈਜਿਸਟਰ	02 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀ।
		ਓਬੇਰੋਨ	01 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ
11	ਫਲ ਅਤੇ ਪੌਦਿਆਂ ਦੇ ਵਾਧੇ ਦਾ ਰੈਗੂਲੇਟਰ	ਪਲੈਨੋਫਿਕਸ	30-40 ਮਿੰਟ। ਲੀ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ

ਜੜ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਗੰਢਾਂ ਵਾਲਾ ਕੀੜਾ - ਇਸ ਕਾਰਨ ਬੈਂਗਣ ਦੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾਂ 'ਤੇ ਗੰਢਾਂ ਬਣ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਪੌਦਿਆਂ ਦਾ ਵਾਧਾ ਰੁਕ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਝਾੜ 'ਤੇ ਮਾੜਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਲਈ, ਫਸਲੀ ਚੱਕਰ ਅਪਣਾਓ ਅਤੇ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ 4 ਕਿਲੋ ਫਰਟੇਰਾ (ਡੁਪੋਂਡ) ਮਿਲਾਓ।

ਛੋਟੇ ਪੱਤਿਆਂ ਦੀ ਬਿਮਾਰੀ - ਇਹ ਬੈਂਗਣ ਦੀ ਇੱਕ ਵਿਨਾਸ਼ਕਾਰੀ ਬਿਮਾਰੀ ਹੈ ਜੋ ਮਾਈਕੋਪਲਾਜ਼ਮਾ ਕਾਰਨ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਬਿਮਾਰੀ ਦੇ ਫੈਲਣ ਕਾਰਨ, ਪੱਤੇ ਛੋਟੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਤਣੇ 'ਤੇ ਗੁੱਛਿਆਂ ਵਿੱਚ ਵਧਦੇ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਸਾਰਾ ਬਿਮਾਰ ਪੌਦਾ ਝਾੜੀ ਵਰਗਾ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਅਜਿਹੇ ਪੌਦਿਆਂ 'ਤੇ ਫਲ ਨਹੀਂ ਬਣਦੇ। ਬਿਮਾਰੀ ਵਾਲੇ ਪੌਦੇ ਨੂੰ ਪੁੱਟ ਕੇ ਨਸ਼ਟ ਕਰ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਬਿਮਾਰੀ ਹਰੇ ਜੂ (ਜੈਸੀਡ) ਦੁਆਰਾ ਫੈਲਦੀ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਇਸਦੀ ਰੋਕਥਾਮ ਕਰੋ।

ਸਿੰਚਾਈ:- ਗਰਮੀਆਂ ਵਿੱਚ ਹਰ 3-4 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਅਤੇ ਸਰਦੀਆਂ ਵਿੱਚ 12-15 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਪਾਣੀ ਦਿਓ। ਵੱਧ ਝਾੜ ਲੈਣ ਲਈ ਸਹੀ ਸਮੇਂ 'ਤੇ ਪਾਣੀ ਦੇਣਾ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਧੁੰਦ ਵਾਲੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਫਸਲ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਲਈ, ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਨਮੀ ਬਣਾਈ ਰੱਖੋ ਅਤੇ ਇਸਨੂੰ ਨਿਯਮਿਤ ਤੌਰ 'ਤੇ ਪਾਣੀ ਦਿਓ। ਫਸਲ ਵਿੱਚ ਪਾਣੀ ਦੇ ਖੜ੍ਹੇ ਹੋਣ ਤੋਂ ਬਚੋ, ਕਿਉਂਕਿ ਬੈਂਗਣ ਦੀ ਫਸਲ ਪਾਣੀ ਦੇ ਖੜ੍ਹੇ ਹੋਣ ਨੂੰ ਸਹਿਣ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ।

ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਰੋਕਥਾਮ:- ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਰੋਕਥਾਮ, ਚੰਗੇ ਵਾਧੇ ਅਤੇ ਸਹੀ ਹਵਾਦਾਰੀ ਲਈ ਦੋ ਤੋਂ ਚਾਰ ਗੋਡੀਆਂ ਕਰੋ। ਪੌਦਿਆਂ ਨੂੰ ਕਾਲੀ ਪੋਲੀਥੀਨ ਚਾਦਰਾਂ ਨਾਲ ਢੱਕ ਦਿਓ ਜੋ ਨਦੀਨਾਂ ਦੇ ਵਾਧੇ ਨੂੰ ਘਟਾਉਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਮਿੱਟੀ ਦਾ ਤਾਪਮਾਨ ਵੀ ਬਣਾਈ ਰੱਖਦਾ ਹੈ।

ਵਾਢੀ:- ਬੈਂਗਣ ਦੀ ਕਟਾਈ ਫਲ ਦੇ ਪੱਕਣ ਤੋਂ ਥੋੜ੍ਹਾ ਪਹਿਲਾਂ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਫਲ ਸਹੀ ਆਕਾਰ ਅਤੇ ਰੰਗ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਬਾਜ਼ਾਰ ਵਿੱਚ ਚੰਗੀ ਕੀਮਤ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ, ਫਲ ਮੁਲਾਇਮ ਅਤੇ ਆਕਰਸ਼ਕ ਰੰਗ ਦਾ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਨੋਟ:- ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿਖੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਜਲਵਾਯੂ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।